E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(3): 501-503
Received: 03-05-2020
Accepted: 18-06-2020

डॉ. प्रदीप कुमार
पूर्व गवेषक, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

Corresponding Author:
डॉ. प्रदीप कुमार
पूर्व गवेषक, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

मिथिलाक माटि–पानि पर आधारित यात्रीक ग्राम्य जीवन

डॉ. प्रदीप कुमार

सारांशः
मैथिली साहित्य मुख्यतः मिथिलाक माटि–पानि पर अधारित रहल अछि। फलतः एहिमे साहित्यकार लोकनि ग्राम्य जीवनक सम्पूर्ण चित्रण करवाक प्रयास करैत रहलाह अछि। स्वतंत्रता पूर्व मैथिली मे लिखल गेल उपन्यास मे मात्र ग्रामीण परिवेशक चित्रण अछि जखन कि स्वतंत्रताक पश्चात् मैथिलीक उपन्यास मे शहरी परिवेश क चित्रण सेहो अछि। यात्रीक मैथिली उपन्यास 'परो' तथा 'नवतुरिया' मुख्यतः गाम्य जीवन पर आधरित अछि। 1946 मे प्रकाशित पारो उपन्यास वैवाहिक समस्या पर लिखत गेल अछि। एहि मे पारो आ बिरजूक प्रेम कथा तथा दुनुमे पत्राचारक वर्णन अछि। संगहि बहु–विवाह, अनमेल विवाह, घटकैती, मधुश्रावणी मे टेमी दगबाक, पुछारिक भार तथा अगिलग्गी आदिक चित्रण अछि।

प्रस्तावनाः
साहित्य होइछ समाजक दर्पण जाहिमे तत्कालीन समाजक साहित्य, कला, धर्म, परिवार, समाजमे घटित–घटना, उत्थान–पतन, हास्य–रूदन, मानव–मनक आशा–आकांक्षा, राग–द्वेष, घृणा–स्नेह आदि साहित्यकारकर मनक उद्वेलित प्रभावित करैछ। फलस्वरूप साहित्यकार लोकनि ओकरा एक गोट साहित्यिक विधाक रूप दऽ तकर विश्लेषणक संगहि निदानक बाट सुझबैत, चेतना जगबैत छथि। साहित्यमे परम्परागत ओ तत्कालीन संस्कृतिक संग माटि–पानिक सोन्हगर गंध सेहो भेटैछ। मनुष्ये जाहि माटि–पानिमे पालित–पोषित रहैत अछि तकर प्रभाव ओकर व्यक्तित्वमे सन्हिआयल रहैछ।
यात्रीक जीवन ओ हुनक साहित्यिक सुषमा सौरभ सँ समकालीन मिथिलाक जनजीवनक दशा स्पष्टतः प्रतिबिम्बित होइछ। ओ अपन ओजपूर्ण व्यक्तितत्वक प्रभाव सामाजिक जीवनमे नव बाट सुझयबाक युक्ति देलनि से छल परिवर्तनक हेतु, करोट फेरबाक लेल। [1]
आधुनिक चेतनशील मैथिल समाजमे कन्यादानक जे रूपरूप अछि तकर वीभत्सता दहेज परम्पराक कारणें अछि। निम्न–मध्यवर्गीय ब्राह्मणक लेल ई एक गोट असहज मुदा अवश्यमीवी पीड़ा थिकैक। लोकलाज सँ बचबाक हेतु परम्पराक मारल खून–पसेना बहाय अर्जित कयल जमीन बेचि कऽ आजुक निम्न–मध्यवर्गीय मैथिक समाज कन्यादान सन पवित्र यज्ञ करैत अछि आ नैहर सँ बेसी सुख सासुरमे भेटबाक आशीषक संग बेटीकें विदा करैछ। मुदा 'पारो', 'नवतुरिया' जाहि काल, वर्ग ओ परम्पराक कथा कहैछ तहर विषयमे मैथिली कथा साहित्यक सीपित लेखिका डा. नीता झाक उक्ति द्रष्टव्य थिक–
समाजक तात्पर्य छल ब्राह्मण समाज ओहि समाजक सभसँ पैघ समस्या छल कन्यादान कन्यादानमे असम विवाहक कारण छल पंजी–प्रथा एवं दहेज प्रथा। .... तकर कारणे होइत छल दुष्परिणाम। एइह छल लेखक लोकनिक विषय, भूमि एवं चरित्रक चयन। [2]
मनुष्यक अपन व्यक्तिगत जीवन–संसार होइत छैक जे सामाजिक जीवन सँ कम रूचिपूर्ण ओ महत्त्वक नहि। पारोमे व्याप्त अनमेल विवाह–जन्य असंतोष मनुष्य मात्रक असंतोष भेलहु जनसामान्यक असंतोष कहाओत। कारण जे व्यक्ति समुदायक मानसिकताकें उघबा लेल मजबूर होइत अछि। गत सदीक चारिम दशकमे मिथिलाक ललाक अन्तर्मनमे अभिलाषाक हिलकोर उठि गेल छल, मुदा ओकरा धरातलपर अनबाक लेल गति आ बाटक अभाव खटकि रहल छलैक।
जीवनमे संस्कार अनुशासनक परतन्त्रताक बन्धन मानि एहि सँ मुक्त रहब अति महत्त्वपूर्ण मानल जाय लागल अछि। मिथिलाक समाज परम्परावादी रूढ़ि सँ प्रस्त हुपोरशंखी प्रवृत्ति सँ भरल छल, से हमर साहित्य कहैत अछि। एहिठाम संस्कार एवं शासन दुहूक प्रमुखता रहलैक अछि, मुदा जँ वर्तमानकें छोड़ि पाछा देखल जाय तऽ स्वतंत्रता तथाकथित, जमींदार बबुआन ओ रूढ़ि परम्परावादीक पोषक मुट्ठीमे बद छल। स्वतंत्रताक अभावमे मानव–मनक लेल की नीक की अधलाह होइत छैक तकर विचार करब महत्त्वपूर्ण नहि छलैका [3] स्वतंत्रता सँ तात्पर्य ओकर शिक्षा, अभिव्यक्ति के जीवनक समस्त स्थिति छैक जे मनुष्यक विकासमे सहायक होइत छैक।
'यात्री' मिथिलान्चलक सामाजिक जीवनक अनुभूति कऽ ओकर पटाक्षेप कयलनि 'पारो'मे। एहिमे अनमेल वृद्ध विवाहक दुष्परिणाम स्वरूप लोकमर्यादाक उल्लंघन कोना होइत छल तकर स्वरूप 'यात्री' द्वारा ठाढ़ कयल गेल अछि।

'पारो' उपन्यास मिथिलाक ग्रामीण समाजमे विद्यमान संक्रमणक दुःस्थिति ओ तकर निदानक बाट सुझबैत अछि। संगहि भविष्यमे होमयबला दुरूपरिणामक संभावना दिश संकेत सेहो। [4]

समाजमे विवाह यौन सम्बनधक परम्परा, नियमन ओ वंशवृद्धिक संग परिवारक गठन लेल एक महत्त्वपूर्ण संस्थाक नाम थिक। मिथिलान्चलक ग्रामीण समाजमे पुरान पीढ़ीक दृष्टिमे विवाह भाग्य पर निर्भर करैत अछि, जकर निर्माता वा पोषक ओ स्वयं अर्थात् पुरूष समाज भऽ जाइछ। अँ ई गप सत्य तऽ असंगत इहो नहि जे पति–पत्नीक बीच अनिच्छित कटुताक मूल कारण यौन–असामन्जस्य, अनिच्छित विवाह ओ अशिक्षा छल।

'यात्री' देखलनि जे परम्परावद्ध ब्राह्मण समाज अपन दरिद्रताक कारणहि विवाहमे क्रय–विक्रय, अनमेल विवाह सन प्रथाके उघने जा रहल छल, मुदा समाजकें बुझबामे ई नहि आबि रहल छलैक जे मैथिल–संस्कृति एवं लोकमर्यादाक लोप कोन रूपें ओ कोन गति सँ भऽ रहल छेक। तें ई कहल जा सकैत अछि जे 'यात्री' साहित्यक माध्यम सँ सामाजिक यथार्थ–बोध कराओल। [5]

'पारो'मे मैथिल ललनाक आशा–आकांक्षा ओकर स्वतंत्रता मनमे उपहल संघर्षक चिनगी भुस्साक आगि जहाँ नहूँ–नहूँ सुनगि कऽ रहि जाइत छैक। ओ संस्कारगत परम्पराक संरक्षणक अढ़मे सभ सेहन्ताकें तिलान्जलि दऽ देलि। मुदा तकर विरोधक श्री गणेश भेल 'नवतुरिया' उपन्यासमे। अपनहि मात्र सँ नहि समुदायक रूपमे गामक नवयुवकक सहयोग सँ।

'नवतुरिया' शब्दक अर्थ थिक युवावर्ग, नवीन पीढ़ी, नवयुवक समाजक संग नव विचारधाराक आग्रही व पुरानपन्थी रूढ़ि, अंधविश्वास सन विचारपर आघात कयनिहार। 'नवतुरिया' उपन्यास गाममे पासैत रूढ़ि–ग्रस्त परम्पराक तोड़बाक कथा कहैत अछि। एहिमे गामक युवक–वृंद जे अपर–मिडिल धरि पढ़ल, चेतनशील व्यक्तिक समूह अछि सैह थिक नवतुरिया। [6]

जें कि उपन्यासक कथा भूमि मिथिलान्चल अछि तँ एहिठामक रूपरेखा देखबामे अबैत अछि। तत्कालीन समाजक अनमेल विवाह, रूढ़ि, ढोंगक जे कथा 'पारो' कहलकर तकर समाधान 'नवतुरिया' मे नवतूरकें आगाँ कऽ यात्री देखओलनि अछि। नारी–शोषणक अप्रत्यक्ष विरोध 'पारो'मे, मुदा प्रत्यक्षतः 'नवतुरिया'मे गामक चेतना सम्पन्न युवकलोकनि सँ भेल अछि। अंधविश्वास, रूढ़ि ओ जड़त्व प्रकृति सँ जकड़ल भा दर्प सँ भरल चतुरानन मिश्र पचपन वर्षक आयुमे हुनक पाँचम विवाहक विरोधी, निरपराथी नवतुरिया दलकें न्याय मंदिरमे बलि चढ़ाय अपन कार्य सिद्ध करबाक आयासमे सतत लागल रहैत छथि। मुदा, नवतुरिया दल हुनका सन–सन कतेको लोक निराश कऽ दैत अछि। ओ विनम्रताक प्रतिमूर्ति सेहो थिक। [7]

उपन्यासक प्रासंगिकता ओ युवा चेतनाक प्रसंग मैथिल कथा–साहित्यक सीपित कथाकार डा. विभूति आनन्दक निम्न वाक्यांश उद्धृत करब समीचीन होयत।

नवतुरियाक सोच यात्रीक व्यक्तित्वक सोचक संग जुड़ल अछि। एहि सोचक उपयोग यात्रीजी अपन माटि–पानिमे करै छथि जे जड़–स्पन्दनहीन आ पण्डिताउ मानसिकता सँ जकड़ल छल। मिथिला भू–खंडक मध्य सँ पनपल कुरीतिक विरूद्ध संघर्ष छ, जे ओही माटि–पानिक अंकूर द्वारा कएल जाइ छ। तँ सूत्र रूपमे कही तऽ नचतुरियाक सोच जमकल– ठमकल पानिमे ढेप मारब थिक आ ओकर हिलकोर कें यात्री मोनक वैचारिक दृढ़ताक नाम देल जाइ तऽ से असंगत नहि होएत।

पं. 'यात्री' जखन बौद्ध भिक्षुक रूपमे श्रीलंका जाय लगलाह त 'अंतिम प्रणाम' शीर्षक कवितामे स्वयं मातृभूमिक परित्यागक निर्णय पर करूणार्द्र होइत लिखैत छथि–

हे मातृभूमि, अंतिम प्रणाम
अहिंबातक पातिल फोड़ि–फाड़ि
पहिलुक परिचय कें, तोड़ि–ताड़ि
पुरजन–परिजन सभकें छोड़ी–छाड़ि
हम जाय रहल छी आन ठाम
माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम!

समाजमे व्याप्त संकीर्ण दृष्टिकोण आ संकुचित विचारकें देखि कवि मैथिल शब्दक एक व्यापक अर्थ 'वन्दना' शीर्षक कवितामे दैत छथि–

मिथिलाक माटि पर बसनिहार.....
सरिपहुँ सभ केओ मैथिले थिक
दुविधा कथीक संशय कथीक?

कवि जनसामान्यक हेतु बोधगम्य परिस्थितिक चित्रण करैत छथि, जतय हिनक हृदयक भाव सरल, सहज स्वाभाविक तथा ठेठ मैथिलीक संग मिलिक कविताकें हृदयस्पर्शी बना दैत अछि। संगहि तेहने आपामरक हेतु स्नेह आ उपादेय वस्तु सेहो बनि गेल अछि। जकरा 'द्वन्द्व' शीर्षक कवितामे देखल जाय–

आधुनिक विज्ञानसँ यदि बढ़ि तोरा
बुझि पड़हु एकादशी–महात्म्य
छपड़ छइ अकबारमे किच्छु सभटा फूसि
ई बुझि फाड़ि जॅ 'मिथिलामिहिर'
आँचे पजारक होहु तोरा म'न
तान तों धुरि जाह गामहि।

उपेक्षित ओ अन्न सँ आँट वर्गक भावनाकें कवि अपनाबय चाहैत छथि। अपन काव्य–गुणक निवेदन करबामे जहिना संस्कृत शब्दावली ओ अलंकारक परित्योग क देने तहिना व्यन्जना उपस्थित करबाक हेतु सेहो प्रसंगकें सर्वथा परित्याग क देने छथि। ठेठ देहाती जीवनक विषाद, विषमता, दुःख–दारिर्द्रय, कालुष्यकें ठेठ, सरल–सहज भाषामे व्यक्त कयने छथि। हिनक कवितामे वाह्याडम्बरक स्थान नहि रहैछ–

छुच्छ कोर, आँखिमे अछि नोर भरल
ने देखल ककरो एहेन कर्म जरल
मनमे उठैत रहइए स्वाति
जो रे राक्षस जो रे पुरूषक जाति।

दलित वर्गक क्लेश एवं मर्मान्त–पीड़ाक जाहि योग्यताक संग 'यात्री' जी निवेदन कयलनि अछि ताहि सँ बेसी प्रायः आन केओ नहि क सकलाह। जँ कोनो ठाम हिनक कथन अतिरंजित भ' गेल छनि त कतहु नहियाँ, मुदा सभक पाछाँ विश्वासक प्रामाणिकता छैक–

जिन्दगी भरि जे अमृत मंथन करए
जिन्दगी भरि जे सुधा संचित करए
ओ पियासे मरि रहल अछि ओकरे
अमृत पीबासँ जगत बंचित करए।

सामान्यतया 'चित्रा' जो 'पत्रहीन नग्न गाछ' कविक दू नवीन आयामक सूचना दैछ, मुदा दुहूमे कोनो विशेष भिन्नता दृष्टिगोचर नहि होइछ। 'चित्रा' मे जँ शब्द–शिल्प ओ भावक व्यन्जना, सरल, स्फीत, प्रान्जल ओ संगेगात्मक छैक, त 'पत्रहीन नग्न गाछ'क अधिकांश कविता व्यंगय वक्रताक कारणें तीक्ष्ण ओ नवीनता लेने अछि। [8] अकाली प्रकृतिक वर्णन करैत कवि ''पत्रहीन नग्न गाछ'' क शीर्षक 'सुखैल टटैल एकटा वेंड्ग'मे धरतीक दयनीय दशार्क देखबैत छथि–

**सुखैल–टटैल एकटा बेंड्ग दराड़ि सँ आएल ऊपर
रहि गेल तकैत आकाश दिस पसरल छलइ लग–पासमे
शुष्क–नीरस क्षत–विक्षत भूमि शून्यप्राय प्रान्तर सहस्त्रधा विदीर्ण
वतावरण वइसक्खा, दारूण निर्लिप्त, सूर्यक मध्याह्नोत्तर
प्रखरताप।**

साओन मासक चित्रात्मक वर्णनक प्रसंग ओहिमे वर्णित मिथिलाक व्यवहार–वैभवकें निम्नांकित पदमे देखल जा सकैछ–

**कान पाथिकँ सुनब पहर भरि
गाबथु प्रौढ़ा लोकनि मलार
भीजब हम भरि पोख पहर भरि
बदरा बरसो मुसलधार, आदि।**

'पत्रहीन नग्न गाछ'क अधिकांश कवितामे प्रकृतिक सरल वर्णन भेल छेक। प्रथम चित्रमे साओनक भरल सर–सरिता, विजुल्लता, भगजोगनी तथा मेघराजकें ठनकबामे एकटा रूपक मात्र चित्रित अछि। [9] दोसर ठाम भीजल–तीतल, धोआयल–नहायल वा सिमसिमाह साओनक मोदप्रियताक ललित वर्णन, विधुरक हेतु अगिलगाओन राधिकादि तरूणी सभक पिछड़ि खसबाक कारणें साओन, मधुश्रावणीमे नवयुरियाक हेतु चुमाओन मासक रूपमे भेल अछि। तेसरठाम साओनक झूलाक वर्णन, चारिमठाम आंचलिक संस्कृतिक छवि ओ अंतिम चित्रमे कृषि–कर्मक प्रधानताक कारणें साओनक अभ्यर्थना कयल गेल अछि। 'कने–कने मध्यान्तर दैत' शीर्षक कवितामे कवि अन्त–श्रावणक चित्रण करैत कमतिया ओ जन–मजूरनीक सर्वाङग भिजयबाक दृश्य उपस्थित करैत छथि। वर्षाक कारण रिक्शावलाक कार्य बंद भ' जयबाक आशंका त' कतहु लोकक कतबाहिमे अर्द्धग्ध उपरफाँटू कोयला बिछैत आयत आँखिवाली संथाली छौड़ीक उपराग सेहो बिसरैत नहि छथि। [10]

निष्कर्षः

श्री 'यात्री'क साहित्यिक रचना–संसार समसामायिक जनजीवनक चित्रक ठोस रूपँ अभिव्यक्त करैत अछि। एहिमे प्रखर यथार्थ–बोध, धरती ओ जन–गणक प्रति अनन्य प्रेम, आस्था एवं विश्वास सँ आद्यन्त मण्डित अछि। युगक शोषण, स्वस्थ एवं स्वतंत्र जीवन हेतु संघर्षरत मनुष्यक चित्रण तथा अपन माटि–पानिक गंध, ग्राम्य ओ नागरिक जीवनक विषमता बीच स्वस्थ–सबल प्रकृति आदि वस्तुतः सामाजिक यथार्थक प्रशस्त संवेदनाक परिचायक थिक। कवि यात्रीक किछु कवितामे निम्नवर्गीय संघषशील आम–जनक चेतना सेहो प्रकट भेल अछि। महाजनी चट्टान सँ ठोकर खाइत, भयंकर संघर्षक आगिमे झरकैत सर्वहाराकेँ समर्थन दैत 'यात्री'क कविता साम्राज्यवादी संस्कृतिक विनासक प्रयासकें जेना ललकारा दैत अछि।

संदर्भ सूचीः

1. मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था–प्रो. रमानाथ झा; पृ. 12
2. मैथिल समाज–पंचानन मिश्र; शेखर प्रकाशन, पटना; पृ. 59
3. पारो (उपन्यास)–श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'; पृ. 95
4. नवतुरिया (उपन्यास)–श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'; पृ. 5–6
5. यात्रीक नवतुरिया–विभूति आनंद (भाषा–टीका); पृ. 61
6. चित्रा (भूमिका)–श्रीयात्री; अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति; पृ. 11
7. वैह; पृ. 4
8. वैह; पृ. 66
9. वैह; पृ. 8
10. पत्रहीन नग्न गाछ–यात्री; यात्री प्रकाशन, पटना/ इलाहाबाद– 1969; पृ. 12